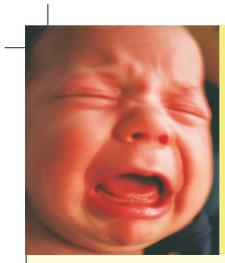

शिशुओं में उदरशूल

3 सप्ताह से 3–4 मास की उम्र तक के शिशुओं का पूर्ण दुग्धपान में पश्चात भी बहुत तीव्रता से रोने की अवस्था को शिशु उदरशूल कहा जाता है।

कारण :

अपूर्ण रूप से विकसित (अपरिपक्व) पाचनतंत्र तथा स्नायु तंत्र।

शिशु का दूध पीते समय पेट में वायु का चला जाना ।

दुग्ध प्रोटीन से ऐलर्जी।

उदर शूल से पीड़ित शिशु :

लम्बे समय तक रोता रहता है।

अपना सिर ऊपर की ओर उठाता है, टांगों को पेट की ओर खींचता है, उसका चेहरा लाल हो जाता है तथा वह गैस पास करता है।

आहार स्वीकार नहीं करता।

सो नहीं पाता।

उदर शूल से पीड़ित शिशु को शांत करने के लिए :

शिशु को सीधा उठाएँ।

शिशु के पेट पर गर्म (गुनगुने) तौलिये अथवा गर्म पानी की बोतल से सिकाई करें।(ध्यान दें कि शिशु की कोमल त्वचा को ज्यादा गर्म से हानि न पहुँचे)

शिशु को गोद में लेकर झुलाएँ

शिशु को करवट में लेटाएँ

शिशु को कुछ चूसने के लिए दें

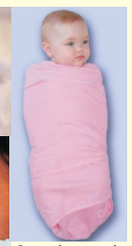

शिशु को कंबल में आरामपूर्वक लपेटें

निम्नलिखित पाँच उपायों का पालन करें :

– शिशु को किसी कम्बल में आराम पूर्वक लपेटें।
– शिशु को पेट के बल अथवा करवट में लिटा दें।
– शिशु को गोद मे लेकर झुलाएं।
– शिशु के कान में ''शशश–––'' की आवाज करें।
– शिशु को कुछ चूसने के लिए दें।

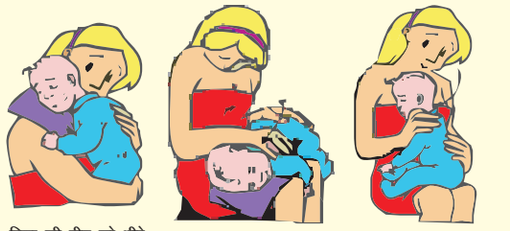

शिशु की पीठ को धीरे से थपथपाएँ।

शिशु को अपनी टाँगों पर उल्टा लिटाएँ।

ध्यान दें कि शिशु के सिर को सहारा दिया हो।

शिशु को डकार दिलाने के तरीके

क्या करें :

ध्यान दें कि शिशु दूध पीते समय वायु ग्रहण न करें (न निगले)

शिशु को दूध पिलाते समय डकार अवश्य दिलाएं : डकार दिलाने के लिए शिशु को कंधे से लगाकर उसकी पीठ को धीरे से थपथपाएँ।

यदि शिशु को दुग्ध प्रोटीन से ऐलर्जी हो तो उसे ऐलर्जी न करने वाला फार्मूला या सोयाबीन का दूध दें।

क्या न करे :

स्तनपान बंद न करें। स्तनपान बंद करने से उदरशूल में वृद्धि हो सकती है।

तेज आवाज, तेज प्रकाश तथा शोर करने वाले खिलौने तथा झुनझुने आदि को शिशु से दूर रखें।

चिकित्सक से परामर्श अवश्य करें यदि :

यदि उपरोक्त उपायों से भी शिशु शांत न हो।

शिशु असाधारण रूप से रोए।

बुखार, सांस लेने में कठिनाई, उल्टी, दस्त अथवा अत्यधिक निद्रा आदि लक्षण हों।

होम्योपैथी द्वारा इस समस्या का उपचार कैसे किया जाए ?

निम्नलिखित होम्योपैथिक औषधियाँ शिशुओं में उदरशूल में प्रयोग की जाती हैं। परन्तु किसी भी औषधि के प्रयोग से पहले किसी योग्य होम्योपैथिक चिकित्सक की सलाह अवश्य लें।

लक्षण	औषधि
उदरवायु, ठंड लगने से अथवा क्रोधित होने के उपरान्त उदरशूल उदरशूल के कारण शिशु घुटने मोड़ कर पेट की ओर लाता है	*कोलोसिन्थ 30*
शिशु में बहुत अधिक चिड़चिड़ापन उदरशूल के साथ चेहरा गर्म तथा गालों का लाल होना शिशु गोद में आना चाहता है तथा गोद में उठाने से उसे आराम मिलता है ऊष्णता (गर्मी) से लक्षणों में वृद्धि होना	*कैमोमिला 30*
कब्ज तथा उदरवायु के कारण उदरशूल पेट में रूक–रूक कर ऐंठन होना पेट मलने से अथवा सिकाई से दर्द में आराम मिलना	*मैग्नीशिया फॉस्फोरिकम 30*
दस्त के साथ उदरशूल शिशु को दिन के समय कोई कष्ट न होना परन्तु रात्रि में चिड़चिड़ा हो जाना तथा रोना	*जलापा 30*
कब्ज तथा उदरवायु के कारण उदरशूल भूख में कमी होना	*सैना 30*

पीछे दिए गए निर्देशों का पालन करें

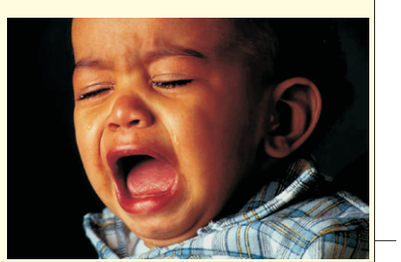

होम्योपैथिक उपचार में सामान्य हिदायतें :

1. इस पत्रिका में निर्देशित औषधियों का उपयोग उसी अवस्था में करना चाहिए जब दिए गए लक्षण रोगी के लक्षणों से मेल खाते हों।
2. औषधि की मात्रा – प्रत्येक तीन घण्टे के बाद 40 नम्बर की 3 गोलियाँ चूस लें अथवा सादे पानी में घोल कर लें।
3. औषधि का सेवन मुँह साफ करके करें और बेहतर होगा कि खाली पेट लें।
4. यदि औषधि सेवन के 24 घंटे की अवधि में आराम आ जाए तो औषधि का सेवन बंद कर दें।
5. यदि औषधि सेवन के बाद 24 घंटे में आराम न आए अथवा लक्षणों मे वृद्धि हो तो होम्योपैथिक चिकित्सक की सलाह लें।
6. औषधियों को तेज गन्ध वाली वस्तुओं जैसे कपूर तथा मेंथाल इत्यादि से दूर रखें।
7. औषधियों को ठंडे एवं शुष्क स्थान पर रखें और धूप एवं गर्मी से दूर रखें।
8. औषधियों को बच्चों की पहुँच से दूर रखें।

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्
(भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन गठित स्वशासी निकाय)
जवाहर लाल नेहरू भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथिक अनुसंधान भवन,
61–65 संस्थागत क्षेत्र, डी–ब्लॉक के सामने, जनकपुरी, नई दिल्ली–110058
फोनः 91–11–28521162, 91–11–28525523 फैक्सः 91–11–28521060
ईमेल : ccrh@del3.vsnl.net.in वेबसाइट : www.ccrhindia.org

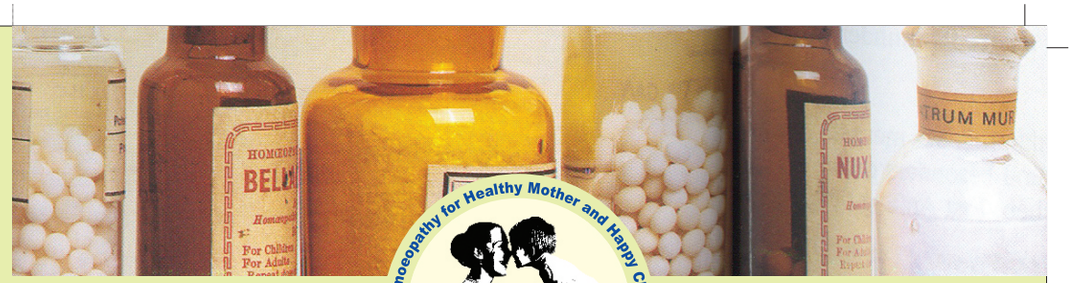

होम्योपैथी द्वारा
मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य रक्षा हेतु
राष्ट्रीय अभियान

शिशुओं में उदरशूल का
होम्योपैथिक उपचार

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी चिकित्सा विभाग (आयुष)
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्
(भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं
परिवार कल्याण मंत्रालय
के अधीन गठित स्वशासी निकाय)